RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 May 2019, Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd May 2019

मासिक पत्रिका

अजायब ✲ बानी

वर्ष : सत्रहवां
अंक : पहला
मई – 2019

परम सन्त अजायब सिंह महाराज के मुखारविंद से अनमोल वचन
कृपाल की नम्रता 5

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
परवरिश 11
(गुरु नानकदेव जी की बानी) (16 पी.एस. राजस्थान)

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
सवाल-जवाब 21

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से
इंसानी जामा एक मौका 31

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा माता–पिता के लिए संदेश
संदेश 33

दिल्ली व अहमदाबाद में सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी
धन्य अजायब 34

विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

उप संपादक : **नन्दनी**
सहयोग : **परमजीत सिंह**

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने पोलिकम ऑफसेट, नारायणा, फेस-1, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

99 50 55 66 71 80 79 08 46 01 - 206 - मूल्य - पाँच रुपये

e-mail : dhanajaibs@gmail.com Website : www.ajaibbani.org

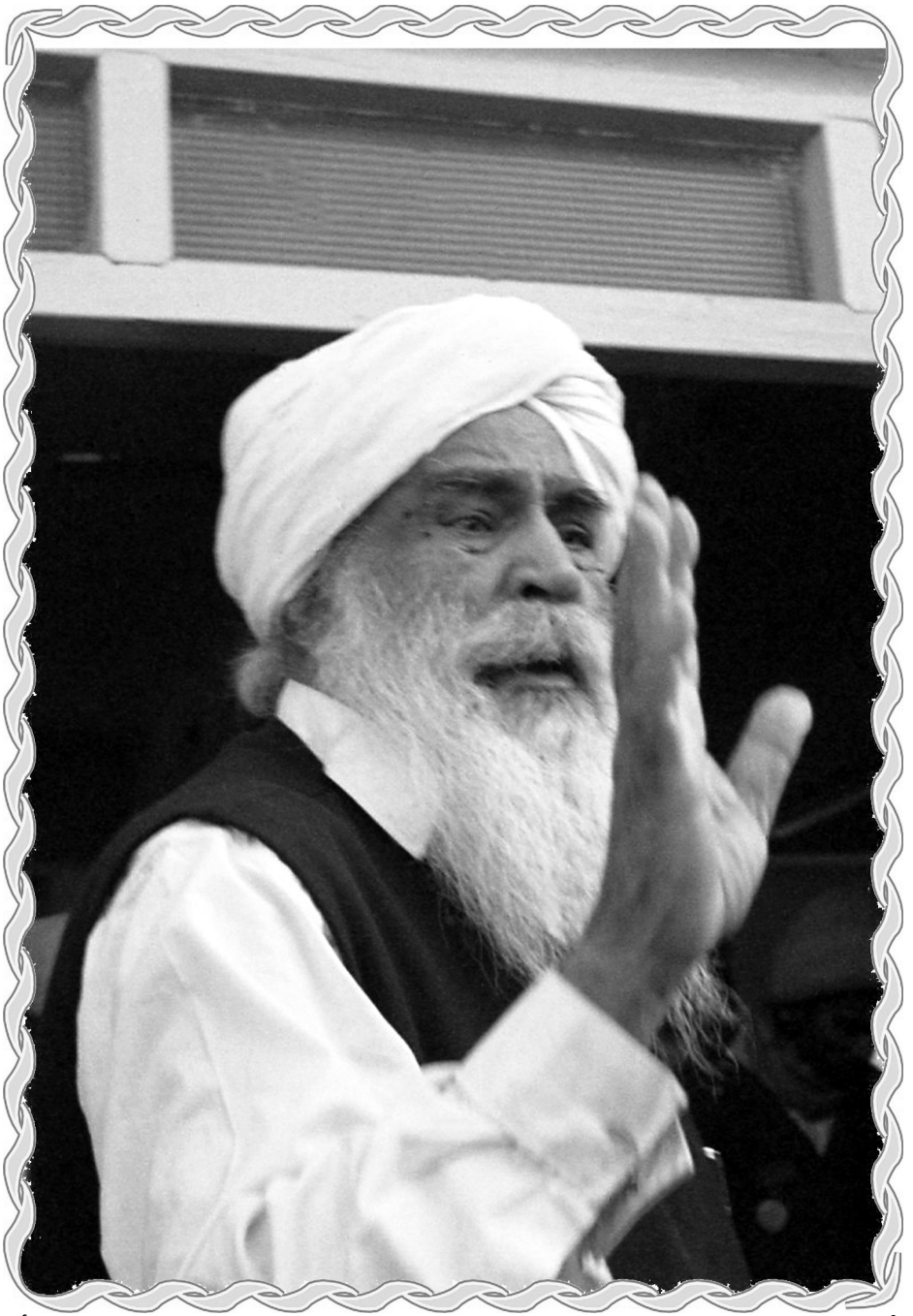

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से अनमोल वचन

कृपाल की नम्रता

एक बार महाराज कृपाल गंगानगर आए। गंगानगर के डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर, पुलिस अधिक्षक व और कई ऊँचे ओहदे वाले जाने-माने व्यक्ति महाराज जी से मिलने आए। ये सब मुझे जानते थे और मेरी बहुत इज्जत करते थे। जब इन्हें पता चला कि मेरे गुरु देव आ रहे हैं तो ये सभी महाराज जी का सम्मान करना चाहते थे।

जब महाराज जी आए तो मैंने इन सब लोगों को महाराज जी से मिलवाया। ये सब बहुत से फूलों के हार लेकर आए थे और महाराज जी के गले में डालना चाहते थे। महाराज जी ने जब फूलों की टोकरी देखी इससे पहले कि वे लोग महाराज जी के गले में हार डालते, महाराज जी ने वे हार उनके गले में डाल दिए। महाराज जी ने उन लोगों को वह मान-सम्मान दिया जो मान-सम्मान वे महाराज जी को देना चाहते थे।

महाराज जी ने कहा, ''आप मेरे गले में हार डालने की इच्छा लेकर आए हैं लेकिन मेरी भी यही इच्छा है। मुझे आप सबका आदर करना बहुत पसंद है, मैं अपनी खुशी जाहिर कर रहा हूँ और मैं आपसे मिलकर बहुत खुश हूँ।''

परमात्मा ने सन्तों को नम्रता देकर ही भेजा होता है। आजजी, नम्रता कमजोरी की निशानी नहीं ये उनके हृदय की विशालता है। नम्रता ही सबसे ऊँचा गुण है क्योंकि पानी हमेशा नीची जगह इकट्ठा होता है इसी तरह जो नम्र है वह सब कुछ पाता है।

कबीर साहब कहते हैं, ''केवल वही परमात्मा को प्राप्त कर सकता है जो सदा नम्र है और नम्र बोल बोलता है क्योंकि परमात्मा हमेशा उसके हृदय में बसता है।''

परमपिता कृपाल कहा करते थे, ''अगर आप परमात्मा को प्राप्त करना चाहते हैं तो अपने अंदर नम्रता पैदा करें।'' वह संपूर्ण परमात्मा किसके आगे नम्र बने? इसलिए जो लोग अपने हृदय में नम्र हैं वे परमात्मा के पास **नम्रता** की भेंट लेकर जाते हैं उन्हें परमात्मा पसंद करता है, अपने घर के अंदर जगह देता है।

महाराज कृपाल को संसार के विभिन्न धर्मों और समाजों का बहुत ज्ञान था। जैसा कि पंडित लोग करते हैं, एक पंडित आपके माथे पर तिलक लगाने आया कि उसे कुछ पैसे मिलेंगे लेकिन महाराज कृपाल ने उस पंडित के माथे पर तिलक लगा दिया साथ में दो रूपये भी दिए और कहा, ''अब हम दोनों खुश हैं क्योंकि आप जो इच्छा लेकर आए थे आपकी इच्छा पूरी हो गई और मैं भी आपसे मिलकर खुश हुआ।''

एक बार मेरे आश्रम में एक छोटी जाति का मुसलमान महाराज जी से मिलने आया। उस समय महाराज जी पलंग पर बैठे हुए थे। महाराज जी ने उस व्यक्ति को जमीन पर नहीं बैठने दिया आपने किसी को बुलाकर कुर्सी मँगवाई। आपने कहा, ''इसमें भी आत्मा है इसे भी कुर्सी पर बैठने का मान मिलना चाहिए।''

महाराज कृपाल बहुत ही प्यारे और नम्रता के पुंज थे। आपकी नम्रता शब्दों में ब्यान नहीं की जा सकती। आपकी नम्रता की कहानियाँ कभी खत्म नहीं हो सकती, आपकी **नम्रता** पर एक बड़ी किताब बन सकती है। ऐसे बहुत से वाक्यात हुए जिससे यह साफ दिखाई देता था कि आप कितने नम्र थे।

अगर मैं आपकी बड़ाई करने की और आपका गुणगान करने की कोशिश करता तो आप इससे खुश नहीं होते थे। आप गुब्बारे की तरह फूल नहीं जाते थे अगर कोई आपका गुणगान करने की कोशिश करता तो आप शान्त रहते। आप सदा यही कहते, ''यह सब महाराज सावन सिंह जी की दया है।''

आपने कभी यह नहीं कहा कि आप कोई ताकत हैं। आप हमेशा कहते, ''मैं एक नाली हूँ मुझे जो पानी महाराज सावन सिंह जी से मिलता है मैं आपको वही देता हूँ।''

आप सदा अपने गुरु को क्रेडिट देते थे। जब कभी मैं महाराज कृपाल को सच्चे पातशाह कहता तो आप मेरा कान पकड़कर कहते, ''खबरदार! दोबारा यह मत कहना।'' आप कभी भी नहीं चाहते थे कि कोई आपकी बड़ाई करे। आप हमेशा ही **नम्रता** में रहकर खुश होते थे। सतगुरु कृपाल सदा ही इस नीच की संभाल करते हैं:

तेरी सोच करे कृपाल, सोचां क्यों करदैं, (2)

1. *कुल मालिक ओह, सारे जग दा, (2)*
   ओह है दीन दयाल, सोचां क्यों करदैं.....

2. *बिना बंदगी कुछ, सोच ना चल दी, (2)*
   भावें सोच लईऐ लख वार, सोचां क्यों करदैं.....

3. *नीचों ऊँच, करे मेरा गोबिंद, (2)*
   ओह सुणदा ऐ सबदी पुकार, सोचां क्यों करदैं.....

4. *मैं-मैं छड के, तूं-तूं कर लै, (2)*
   तेरी रखया करे प्रतिपाल, सोचां क्यों करदैं.....

5. विच दरगाह दे, गुरु दा सहारा, (2)
पिच्छे हट जाऐ काल कराल, सोचां क्यों करदैं.....

6. अंदर साफ, जिन्हां दे सच्चे, (2)
ओह हरदम कर दा संभाल, सोचां क्यों करदैं.....

7. सूली दी फिर, सूल बनावे, (2)
मोह माया दा कट दा जंजाल, सोचां क्यों करदैं.....

8. लख शुक्राना, गुरु मेहरबाना, (2)
लया आ के 'अजायब' संभाल, सोचां क्यों करदैं.....

महाराज जी ने मुझे गुफा में बैठकर भजन करने का हुक्म दिया कि वे मेरी संभाल खुद करेंगे। उन्होंने मुझसे कहा, ''तुमने बाहर नहीं आना मैं खुद तुमसे मिलने आऊंगा।'' उसके बाद आप शारीरिक रूप में मुझसे मिलने आया करते थे। जब मेरे इलाके का कोई प्रेमी आपसे मिलने दिल्ली जाता तो आप उस प्रेमी से मेरा हाल-चाल पूछते कि मैं कैसा हूँ?

महाराज जी अंतर में मेरा बहुत फिक्र करते थे लेकिन बाहर से भी उन्हें मेरी बहुत चिंता रहती थी। इस गरीब की खातिर महाराज कृपाल ने गंगानगर कांग्रेस कमेटी के मुखिया को बुलाया और उसके साथ बैठकर खाना खाया। आपने उससे कहा, ''सन्त जी का ख्याल रखना आपका काम है।'' मैंने अपना इतना ध्यान नहीं रखा जितना कि महाराज जी ने मेरी संभाल की।

हम जब तक यह कहते हैं कि हम अपनी संभाल खुद कर रहे हैं तब तक हमें गुरु की पूरी सुरक्षा नहीं मिलती। हम सोचते हैं कि हम खुद अपनी देखभाल कर रहे हैं लेकिन जब हम अपने आपको

गुरु के हवाले कर देते हैं तब हमारी सारी चिंताएं गुरु की चिंताएं बन जाती हैं फिर गुरु हमारी संभाल और रक्षा करता है।

जब तक बच्चा यह समझता है कि वह खुद अपनी संभाल करने के काबिल है और अपने आपको माता-पिता के हवाले नहीं करता तो माता-पिता अपने कारोबार में व्यस्त रहते हैं बच्चे की तरफ पूरी तवज्जो नहीं देते लेकिन जब बच्चा मदद के लिए पुकारता है तो माता अपने सभी काम छोड़कर बच्चे के पास दौड़ी आती है। इसी तरह जब हम अपने आपको पूरी तरह से गुरु के हवाले कर देते हैं तब गुरु भी दौड़ा चला आता है और हमारी संभाल करता है।

जब सेवक अपने अंदर गुरु का शब्द स्वरूप प्रकट कर लेता है तब उसका अहंकार खत्म हो जाता है। जब सेवक वहाँ पहुँचता है तो वह देखता है कि कितने सारे गुरुमुख सेवक और उससे बेहतर सेवक पहले ही वहाँ पहुँचे हुए हैं। वहाँ पहुँचकर वह गुरुमुख शिष्यों की तुलना में अपने आपको कुछ भी नहीं समझता। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

ओथे इक दू इक चढ़ंदीआं कौण जाणै मेरा नाओं जीओ।

तब आत्मा सतगुरु से कहती हैः

तेरे जेहा मैंनू इक वी नी मिलणा।
मेरे जहियां तैनूं लक्खीं प्यारेया।।

इस गरीब आत्मा ने भी अपने गुरु से यही कहा, ''मेरे सतगुरु! मुझे तेरे जैसा एक भी नहीं मिलेगा लेकिन तुझे मेरे जैसे लाखों मिल जाएंगे।''

***

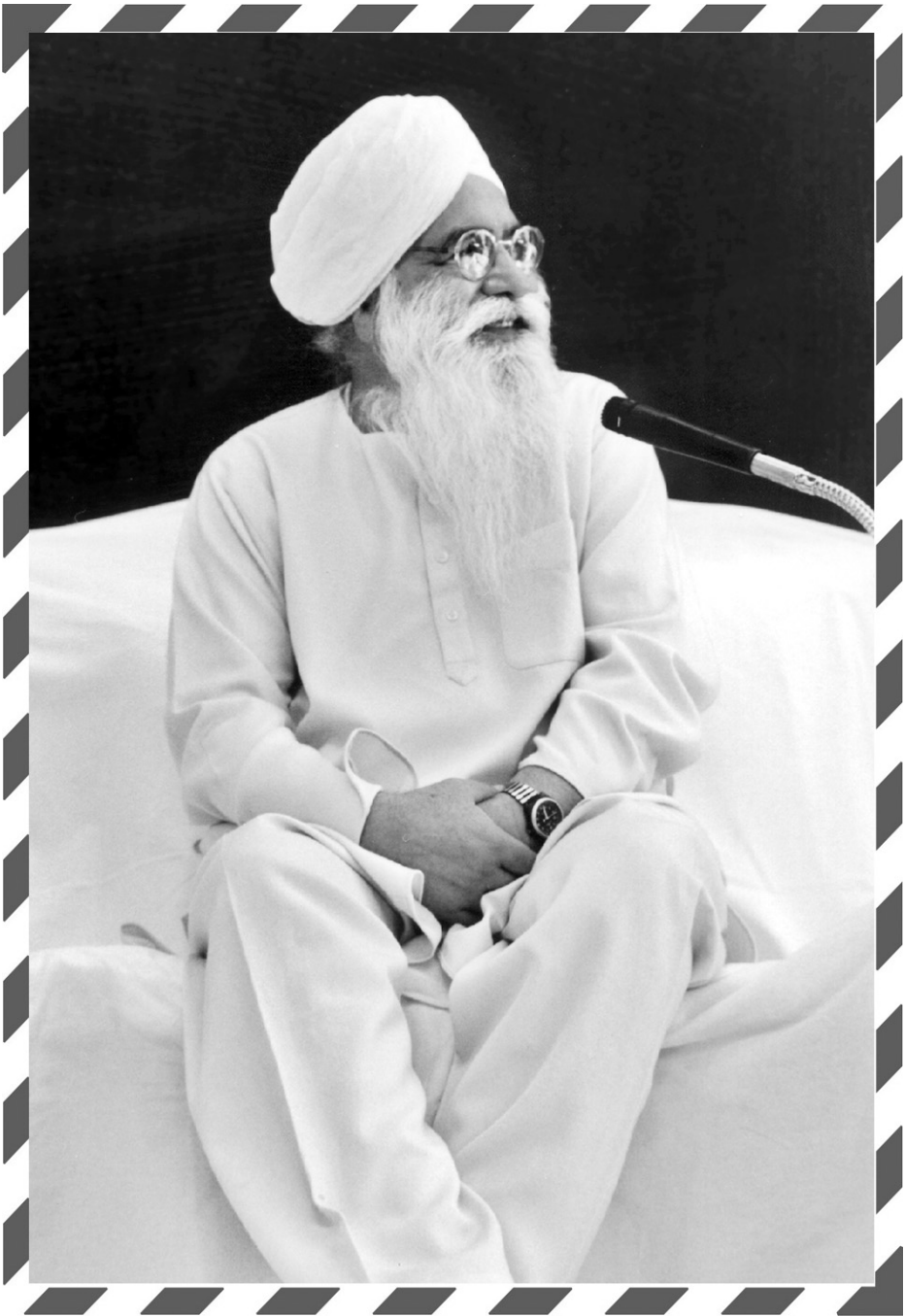

सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परवरिश

(गुरु नानकदेव जी की बानी)

परमात्मा ने बहुत दया करके हमें रत्नों की खान यह इंसानी जामा दिया है। यह जामा न मूल्य से मिलता है और न ही हम इसे किसी ताकत से प्राप्त कर सकते हैं। मन के कहने पर चलकर हमें इस जामें को विषय-विकारों और नशों में बर्बाद नहीं करना चाहिए। परमात्मा ने हमें जिस मकसद के लिए यह ईनाम दिया है उसे याद रखना चाहिए। हम परमात्मा की भक्ति, परमात्मा से मिलाप इंसानी जामे में ही कर सकते हैं।

शेख बरम ने गुरु नानकदेव जी से सवाल किया, ''इस चलती-फिरती दुनिया में पशु-पक्षी, पेड़ इत्यादि की परवरिश कौन करता है? क्या ये अपने उद्यम से रोजी-रोटी खा रहे हैं या कोई और इनकी संभाल कर रहा है?''

गुरु नानकदेव जी प्यार से शेख बरम को बताते हैं, ''शुरू-शुरू में सब जीव खासकर इंसान यही समझता है कि हम अपनी **परवरिश** खुद कर रहे हैं। जिन महात्माओं की आँखें खुल जाती हैं वे जानते हैं कि जिसने हमें पैदा किया है वही हमारी परवरिश कर रहा है, उसे हमारी चिन्ता है।''

हम पक्षियों को चोगा डालते हैं। पक्षी चोगा खाकर उड़ जाते हैं वे अगले दिन की भी चिन्ता नहीं करते। उनके पास चोगा इकट्ठा करके रखने की कोई जगह भी नहीं। उन्हें अंदर से ज्ञान है कि जिस परमात्मा ने आज रोजी-रोटी दी है वह कल भी देगा लेकिन इंसान ही ऐसा है जो अपनी चिन्ता में खुद ही फँसा हुआ है। यह

सोचता है! मैं कैसे धन कमाऊँ? धन कमा लेने के बाद बुढ़ापे की फिक्र करता है फिर पुत्र-पौत्रों के लिए सोचता है कि इनके लिए भी कुछ बनाकर जाऊं। कहने का भाव इंसान की तृष्णा बढ़ती ही जाती है।

उदासी मत में एक रोटीनन्द नाम का साधु था वह मेरा अच्छा दोस्त था। वह अक्सर रोटी माँगकर हाथ पर रखकर ही खा लेता और आगे बढ़ जाता था। एक बार वह बीमार हो गया। एक प्रेमी उसे चार आने देकर गया। उस जमाने में चार आने का चार-पाँच किलो आटा आ जाता था। उसने उन पैसों की मिठाई मंगवाकर जो उसके पास बैठे थे, उन्हें खिला दी और थोड़ी सी अपने लिए रख ली। ऐसा वही करते हैं जिन्हें परमात्मा पर भरोसा है। महात्मा रोटीनन्द कहा करते थेः

अध्धी रोटी खाकर करे गुजारा नित।
अध्धी वंडदा फक्करा जेहड़ा रब्ब दा मित॥

आप देखते ही हैं कि महात्मा अपना कमाया हुआ धन और प्रेमियों के धन को भी खुले दिल से लंगर में लगा देते हैं लेकिन दुनियादार अपनी ही फिक्र में लगे रहते हैं। महात्मा जानते हैं कि जिस मालिक ने आज दिया है वह कल भी देगा।

गोईन्दवाल में गुरु अमरदेव जी के समय में सेवा के लिए जो भी पदार्थ आता उसे शाम तक पका लिया जाता था और रात को सारे बर्तन धोकर रख दिए जाते थे कि जिस परमात्मा ने आज भेजा है वह कल भी भेजेगा। कबीर साहब कहते हैंः

कबीर माया सूम की, देखन ही का लाड।
जे कर कौड़ी घट जाए, ते साईं तोड़े हाड॥

कंजूसों को माया गिनने और संभालकर रखने का ही हुक्म है कि कितना धन बैंकों में है और कितना ब्याज आ रहा है। वे

सिर्फ धन को गिनकर और देखकर ही खुश होते रहते हैं। वे एक कौड़ी न तो अपने ऊपर खर्च करते हैं और न दान ही देते हैं।

आप बड़े प्यार से शेख बरम को समझाते हैं, ''देख प्यारेया! परमात्मा को सारी कायनात का फिक्र है, वह रोजी-रोटी देते हुए नहीं थकता। परमात्मा पत्थर में रहने वाले कीड़ों को, जल में रहने वाले जीवों को भी रोजी-रोटी देता है।''

पुरखां बिरखां तीरथां तटां मेघां खेतांह॥

परमात्मा इंसानों को, समुंद्र में रहने वाले और समुंद्र के किनारे रहने वाले जीवों को भी रोजी-रोटी देता है। परमात्मा खेतों की खुराक मुहैय्या करता है। बादलों और बादलों में रहने वाले सूक्ष्म जीवों की और देवी-देवताओं की भी **परवरिश** करता है।

दीपां लोआं मंडलां खंडा वरभंडांह॥

आप कहते हैं, ''परमात्मा धरती और धरती के द्वीपों में बसने वाले सब जीवों की प्रतिपालना करता है।''

अंडज जेरज उतभुजां खाणी सेतजांह॥

परमात्मा अंडो से पैदा होने वाले, जेरज से पैदा होने वाले इंसान, चौपाए जानवरों की, मौसम की तबदीली से पैदा होने वाले जीव और वनस्पति की भी **परवरिश** करता है।

सो मिति जाणै नानका सरां मेरां जंताह॥

परमात्मा को सब जीव-जंतुओं की फिक्र है कि मुझे इनको कैसे रोजी-रोटी देनी है, वह भूलता नहीं।

नानक जंत उपाइ कै संमाले सभनाह॥

परमात्मा सबकी संभाल करता है कि कब किसकी पैदाइश और कब किसकी मौत करनी है। वह रोजी देते हुए किसी के ऐबों की तरफ नहीं देखता, अच्छे-बुरे सभी को रोजी देता है।

जिनि करतै करणा कीआ चिंता भि करणी ताह॥

आप कहते हैं, ''देख भई शेख बरम! **यह बड़े सोच विचार की बात है कि जिसने यह प्रपंच रचा है उसी ने इसे चलाना है। इंसान फिजूल में ही अपनी चिन्ता करता है, चिन्ता इसका कुछ भी नहीं संवारती। चिन्ता करने से बीमारियाँ पैदा होती हैं। समझदार लोग कहते हैं कि चिन्ता चिता के समान है।**''

नानक चिन्ता मत करो, चिन्ता तिसही हेय।
जल में जंत अपायन, तिन्ना को रोजी देय॥
ओथे हट ना होवी, ना कोई लेय ना देय।
विच उपाय सहरा, तिन्ना को रोजी देय॥

सो करता चिंता करे जिनि उपाइया जगु॥
तिसु जोहारी सुअसति तिसु तिसु दीबाणु अभगु॥

आप कहते हैं, ''जिसने इस जग की रचना की है उसे सबकी फिक्र है, हम उसे नमस्कार करते हैं। वह अभूल है। उसका दरबार सच्चा है। उसका कभी नाश नहीं होता। कोई उसे दंड देने वाला नहीं, कोई उसका शरीक नहीं।''

नानक सचे नाम बिनु किआ टिका किआ तगु॥

गुरु नानकदेव जी शेख बरम से कहते हैं, ''देख प्यारेया! जो नाम की कमाई नहीं करता। जब तक अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म, कारण के तीनों परदे उतारकर दसवें द्वार में नहीं पहुँचता, तब तक उसे समझ ही नहीं आती। वह अपने आपको पूरा इंसान ही नहीं कहलवा सकता।''

नाम की कमाई के बिना अंदर जाए बिना माथे पर तिलक लगाने से, जनेऊ पहनने से शरीर पर इस तरह के चिह्न-चक्र धारण करने से शान्ति नहीं मिलती।

लख नेकीआ चंगिआईआ लख पुंना परवाणु॥

सिक्ख इतिहास में आता है कि गुरु नानकदेव जी ने यह शब्द ज्योति-जोत समाने से पहले अपने बच्चों के प्रति उचारा था। आपके ज्योति-जोत समाने के समय आपके बच्चे आपके पास नहीं आए थे। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थेः

वैद्य वकील सन्त सरदारे, पिंड विच माण न पौन्दे चारे।
नानक दादक ते घरवाली, ऐह वी रहण साध तो खाली॥

गुरु नानकदेव जी के बेटे श्रीचन्द और लखमी दास ने आपसे 'नाम' नहीं लिया था। श्रीचन्द ने अविनाशी मुनि को गुरु धारण किया था। अविनाशी मुनि ने श्रीचन्द को तीर्थों पर तप करने और शरीर पर सिर्फ एक लंगोट पहनने के लिए कहा था लेकिन गुरु नानकदेव जी ने आखिरी समय में इन पर तरस खाकर कहा, ''चाहे जितने मर्जी तीर्थ कर लें, समाधियाँ लगा लें परमात्मा के दरबार में इनकी कोई कीमत नहीं।''

श्रीचन्द की गद्दी उदासी संप्रदाय की थी। इस संप्रदाय वाले 'दो-शब्द' का भेद देते थे। बाबा बिशनदास जी के गुरु अमोलक दास जी ने श्रीचन्द से ही 'नामदान' लिया था। उस समय श्रीचन्द की गद्दी बहुत मशहूर थी।

गुरु नानकदेव जी बेदी परिवार में हुए। हिन्दुस्तान में अभी भी लोग बेदी जाति वालों का आदर करते हैं। जिस वंश में कोई साधु हुआ होता है आमतौर पर लोग उस वंश को बहुत मान देते हैं।

लख तप उपरि तीरथां सहज जोग बेबाण॥

चाहे तीर्थों पर जाकर लाखों किस्म के तप कर लें, चाहे जितनी मर्जी समाधियाँ लगा लें! परमात्मा के दरबार में इनकी कोई मान्यता नहीं।

लख सूरतण संगराम रण महि छुटहि पराण॥
लख सुरती लख गिआन धिआन पड़ीअहि पाठ पुराण॥

चाहे लाखों बार रणभूमि में प्राण छोड़ें, सूरमा कहलवाकर मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते। चाहे आप अठारह पुराणों को पढ़ लें, ज्ञान-ध्यान की कितनी भी बातें कर लें इन सबसे परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकते।

जिनि करतै करणा कीआ लिखिआ आवण जाणु॥
नानक मती मिथिआ करमु सचा नीसाणु॥

बाहरी रीति-रिवाजों और कर्मकांडो को मिथ्या बताया है। इनके करने से हमारा दुनिया में आना-जाना खत्म नहीं होता। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

बिन नामे नहीं छूटस नानक।

सचा साहिबु एकु तूं जिनि सचो सचु वरताइआ॥

आप कहते हैं, ''परमात्मा ही सच्चा है। सच का मतलब जिसका कभी नाश न हो। परमात्मा ने ही सन्तों के अंदर बैठकर सच्चे नाम का वरतारा किया है।''

महात्मा हमें प्यार से समझाते हैं कि दुनिया में ऐसा कोई भी इंसान नहीं जिसके सारे काम पूरे हो जाएं और उसकी सारी

कल्पनाएँ खत्म हो जाएं। किसी के चार काम पूरे हो गए, दो रह गए और किसी के दो काम पूरे हो गए तो चार काम अधूरे रह गए। अंत समय में जिन बचे हुए कामों की कल्पना रह जाती है उसकी वजह से ही हम फिर वहाँ जन्म ले लेते हैं। वहाँ दो कल्पनाएँ पूरी हो जाती हैं और दस अधूरी रह जाती हैं। ये कल्पनाएँ ही हमें बार-बार इस संसार में लेकर आती हैं।

परमात्मा ने इस संसार में हर किस्म के इंसान पैदा किए हैं। बाबा बिशनदास जी मन को शेख चिल्ली की तरह बताया करते थे। शेख चिल्ली दिन में ही सपने देखा करता था। एक बार की बात है कि वह बैठा हुआ था। सिपाही ने उससे कहा, ''तू यह घी का टीन उठाकर वहाँ पहुंचा दे तो मैं तुझे दो आने मजदूरी दूँगा।''

शेख चिल्ली ने टीन उठाकर सिर पर रख लिया और सोचने लगा कि मैं इन दो आनों से अंडे खरीदूंगा। अंडों में से बच्चे निकलेंगे जिनकी मुर्गियाँ बन जाएँगी। उन मुर्गियों को बेचकर बकरियाँ खरीदूँगा। बकरियों को बेचकर जो मुनाफा होगा उससे गाय खरीदूँगा फिर गाय बेचकर जो मुनाफा होगा उससे मैं अपनी शादी करवाऊँगा फिर मेरे बच्चे होंगे।

मैं अपने बच्चों से प्यार किया करूँगा। बच्चे बड़े होकर आपस में झगड़ेंगे तो मैं उन्हें समझाऊंगा। जब बच्चे मेरा कहना नहीं मानेंगे तब मैं उन्हें इस तरह लात मारूँगा। जब उसने लात चलाई तो सिर पर रखा हुआ टीन गिरकर जमीन पर बिखर गया। सिपाही ने उससे कहा कि तूने मेरा नुकसान कर दिया। शेख चिल्ली ने कहा, ''तेरा तो थोड़े से रुपयों का नुकसान हुआ है लेकिन मेरा तो सारा परिवार ही बिखर गया है।''

कहने का भाव हमारा मन शेख चिल्ली से कम नहीं। यह सारा दिन ऐसे ही ख्याल बनाता रहता है।

जिसु तूं देहि तिसु मिलै सचु ता तिन्ही सचु कमाइआ॥

लोग कहते हैं कि हम 'नाम' लेकर आए हैं या हमने नाम लेना है। यह सब परमात्मा के हाथ में है कि किसे 'नाम' देना है किसकी मुक्ति करनी है! किससे इस जन्म में भक्ति करवानी है फिर दोबारा इसे संसार में नहीं लाना।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''लोग कहते हैं कि हम भजन पर बैठते हैं लेकिन जब अंदर जाकर सच्चाई देखते हैं तो पता लगता है कि कोई हमें खींचकर भजन पर बिठा रहा है।''

सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ह कै हिरदै सचु वसाइआ॥

आप कहते हैं, ''हम 'नाम' की दौलत सतगुरु से ही प्राप्त कर सकते हैं। सतगुरु मिले वह हमें 'नाम' दे। सतगुरु हमारे अंदर प्यार की दौलत बसा देते हैं।''

मूरख सचु न जाणन्ही मनमुखी जनमु गवाइआ॥
विचि दुनीआ काहे आइआ॥

मन का कहना मानने वाले लोग मूर्ख हैं मनमुख हैं। वे परमात्मा से तन लेकर बच्चे-बच्चियाँ और धन-पदार्थ लेकर चोर बने हुए हैं। उनका इस दुनिया में आना बेकार है। वे परमात्मा की मौज को नहीं समझते। उन्हें इंसानी जामे का जो मौका मिला था वे उसे गंवाकर चले गए।

बाबा बिशनदास जी बताया करते थे कि एक मनमुख और गुरुमुख में अच्छा प्यार था। मनमुख हमेशा परमात्मा को गालियाँ

निकालता और गुरुमुख हमेशा ही परमात्मा के भाणें में रहता। परमात्मा ने दोनों की पीठें जोड़कर जन्म दे दिया कि मनमुख कहाँ तक गालियाँ निकालेगा? क्या गुरुमुख को भी अभाव आएगा?

जब मनमुख परमात्मा को गालियाँ निकालता तो गुरुमुख को भी सुननी पड़ती। गुरुमुख कहता, ''भ्रावा! परमात्मा हमें हमारे कर्मों की इससे भी ज्यादा सजा दे सकता है।'' मनमुख कहता, ''वह परमात्मा इससे ज्यादा और क्या सजा दे सकता है? और भी जो सजा देनी है, दे ले!''

थोड़े समय बाद गुरुमुख का शरीर छूट गया। अब मनमुख को गुरुमुख के शरीर का बोझ भी उठाना पड़ता था। उसके तन से बदबू आने लगी। बदबू की वजह से कोई भी उसके पास नहीं रुकता था। आकाशवाणी हुई कि तू परमात्मा को मान ले। परमात्मा का शुक्रगुजार हो जा लेकिन वह फिर भी नहीं माना। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

मनमुख जे समझाइए पी औजड़ जाए।

प्यारेयो! हमें मालिक के भाणें में रहना चाहिए। अगर दुःख आता है तो यह हमारे कर्मों का ही है। हमें परमात्मा से शिकायत नहीं करनी चाहिए। स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''किसी को दोष क्यों देते हो? जैसा करके आए हो वही आपको भोगना पड़ रहा है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

ददा दोष ना दीजे काहू, दोष कर्मां आपणया।
जो मैं कीता सो मैं पाया, दोष ना दीजे अवरजना॥

***

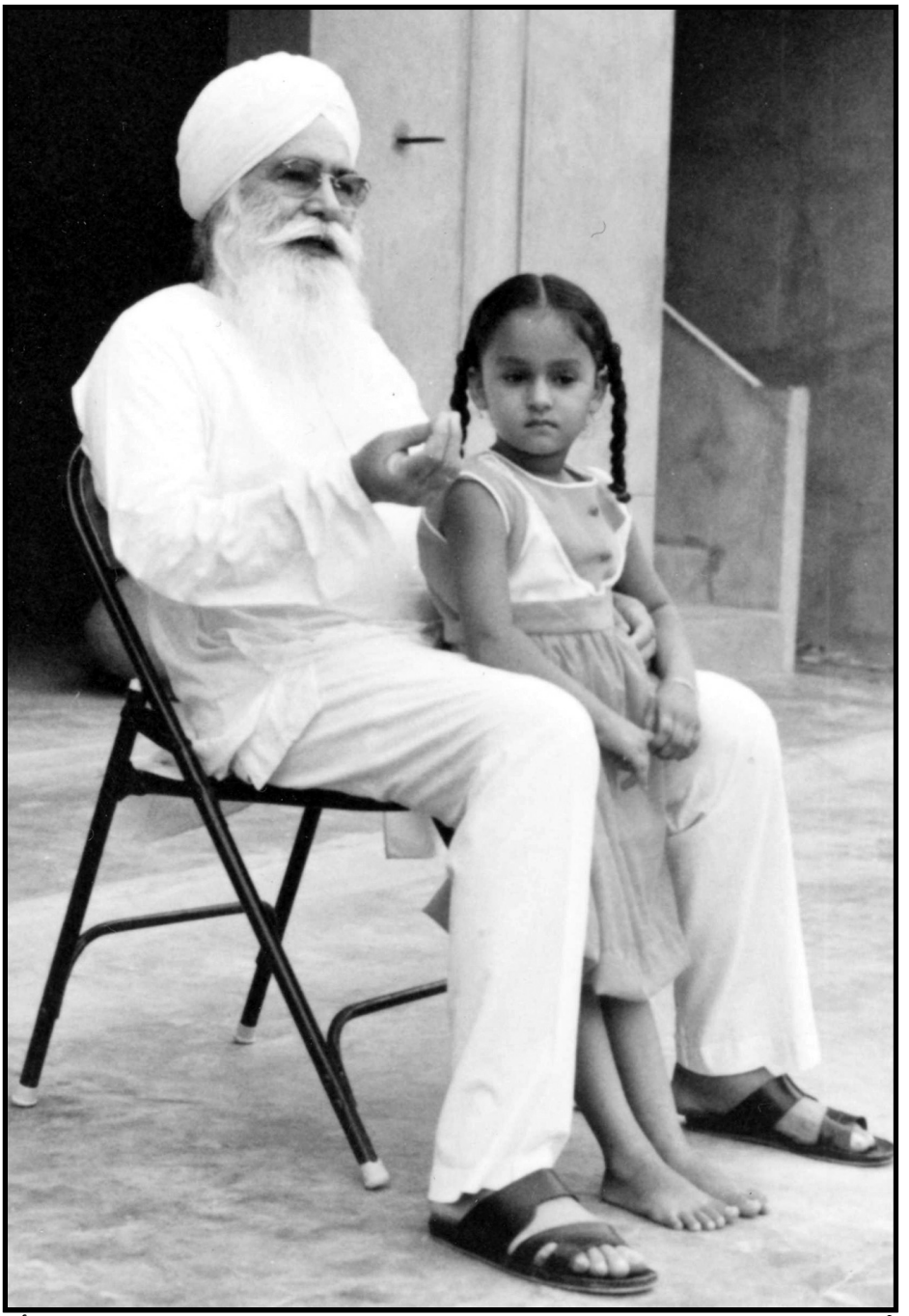

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल–जवाब

26 Oct 1985

एक प्रेमी :- *आप हमें जुड़वा आत्माओं के बारे में बताएं किस तरह एक आत्मा दो शरीरो में रहती है और गुरु किस तरह दो आत्माओं को जोड़कर एक करता है?*

बाबा जीः- हाँ भई! इस सवाल का जवाब बहुत आसान है। एक ही तरीका है जिसके साथ वह आपको जोड़ता है बेशक आत्माएँ अलग-अलग शरीरों में रहती हैं। जिस तरह परमात्मा एक है बेशक वह अलग-अलग शरीरों में शब्द-रूप होकर समाया हुआ है उसी तरह आत्मा भी एक ही है। जब आत्मा शब्द के साथ जुड़ जाती है तो वह भी एक हो जाती है। आत्मा का गुण, स्वभाव, तत्व एक है, आत्मा उस परमात्मा की अंश है।

मैंने सुबह बताया था कि लगातार मन की जुबान से सिमरन करना है। हमने सिमरन के जरिए अपने ख्याल को आंखो के पीछे लाना है, नौं द्वारे खाली करके दसवें द्वार में जाना है। हमारी आत्मा पर पहले स्थूल पर्दा है उसके अंदर सूक्ष्म पर्दा है उसके अंदर कारण पर्दा है। जब आत्मा तीनों पर्दे उतारकर दसवें द्वार में पहुँच जाती है वहाँ यह न काली है न गोरी है, न एक है न दो है और न चार है। इसे पता लगता है कि मेरा परमात्मा एक है। स्त्री और पुरुष का भेद इससे नीचे-नीचे है। यहाँ पहुँचकर स्त्री-पुरुष का भेद खत्म हो जाता है तब दो शरीरो के अन्दर दो आत्माएं कैसे हो सकती हैं? स्वामी जी महाराज कहते हैः

दूरी यहाँ दूर होय, दृष्टि ज्योत में तरना।।

आप कहते हैं कि जब आत्मा यहाँ पहुँच जाती है तब गुरु इसे दो से एक करता है फिर अपनी दया से आत्मा को शब्द के जरिए एक से दूसरा मण्डल पार करवाता हुआ सच्चखंड ले जाता है।

एक प्रेमीः- *यहाँ पर हम जितने भी लोग बैठे हैं मैं उन सबकी तरफ से आपसे विनती करता हूँ कि आप चौबीस घंटे हमें अपना प्यार बख्शें और हमेशा हमारे मन में आपके लिए प्यार बना रहे।*

बाबा जीः- हाँ भई! सन्त-सतगुरु हमेशा अपने बच्चों को प्यार ही देते हैं। मैं तो खासकर हमेशा ही ज्यादा से ज्यादा प्यार देता हूँ। मेरे परमात्मा कृपाल प्यार का सागर थे, मैं उनकी बूँद का प्यासा था। मुझे विरासत में प्यार ही मिला है, मैं प्यार का पुजारी था और मैंने प्यार ही मांगा। मैं परमात्मा कृपाल का दिया हुआ प्यार ही आपको दे रहा हूँ। मैंने आज एक शब्द बोला थाः

तेरी सोच करे कृपाल, सोचा क्यों करदैं।

हमें सोच में नहीं पड़ना चाहिए क्योंकि हमारी फिक्र हमारा गुरु ही कर रहा है अगर गुरु प्यार नहीं देते तो आज हम उनकी याद में जुड़कर नहीं बैठे होते। एक और शब्द बोला थाः

लक्खां शक्लां तक्कियां अक्खियां ने, कोई नजर मेरी विच खुबदी ना।

तीसरा भजन शुरू किया था, इतने में किसी ने आकर दरवाजा खटखटाया तो बस! वह शब्द इतना ही रह गयाः

कृपाल गुरु दा नाम ध्याए, कोट जन्म के दुख गँवाए।।

एक प्रेमीः- *महाराज कृपाल से मुक्ति प्राप्त करने से काफी समय पहले जब आप जवान अवस्था में थे तब आपको उस समय के महान गुरु बाबा सावन सिंह जी से मिलने का मौका मिला लेकिन बाबा सावन सिंह जी ने आपको नामदान क्यों नहीं दिया?*

क्योंकि उस समय हर आदमी को नामदान बड़ी आसानी से उपलब्ध था। नामदान प्राप्त न होने की वजह से हो सकता है कि आपको परेशानी हुई हो? आपको बीस साल दुख और तड़प में बिताने पड़े। क्या आप हमें इस लायक समझेगें और बताएगें कि उस समय आपकी क्या भावनाएं थी, आपको क्या महसूस हुआ? जब बाबा सावन सिंह जी ने यह फैसला किया कि आपको नामदान नहीं देना, उस समय आपके मन में क्या हो रहा था? आपने जो इतने दुखदायी साल बिताए आप हमें उस समय के बारे में बताएं?

बाबा जीः- हाँ भई! सबसे पहले कोशिश करें कि सवाल छोटा हो। जब सवाल लम्बा होता है तो उसका जवाब भी लम्बा हो जाता है दूसरे प्रेमियों ने भी अपने दिल का आभार प्रकट करना होता है। मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं बेशक सवाल लम्बा पूछें लेकिन जब मैं जवाब दूँगा तो आप लोगों का दूसरा सवाल रह जाएगा।

हाँ भई! मुझे बहुत खुशी है बड़ा दिलचस्प सवाल है। मैं आप लोगों को सबसे पहले तो यह सलाह दूँगा कि आप मिस्टर ओबराय की लिखी किताब प्यार से पढ़ें। उस किताब में मेरे वाले हिस्से में बहुत कुछ खोलकर लिखा हुआ है। आपने मेरे बारे में काफी कुछ सुना और पढ़ा होगा फिर भी मैं आप सबको थोड़ा और समझाने की कोशिश करुँगा।

सबसे पहले मैं आपको बताता हूँ कि जब मैं पाँच-छह साल का था उस समय मुझे पूरी होश भी नहीं थी मेरे दिल में परमात्मा से मिलने का शौंक था, तड़प थी। मैं सिक्ख घराने में पैदा हुआ था। जब मैं अपने माता-पिता के साथ गुरुद्वारे जाता तब गुरु नानकदेव जी और दसों गुरुओं की सिफत सुनता। मैं गुरुओं के मुत्तलिक सेवकों की श्रद्धा और सेवकों ने गुरुओं से किस तरह फायदा

उठाया। तब मैं यह सोचता! क्या मेरे भाग्य में भी गुरु का मिलाप है, क्या मुझे भी गुरु मिल जाएगा?

मैं जब यह सुनता कि किस तरह सिक्ख मन के पीछे लगकर गुरु से दूर हो जाते हैं, तब मैं यही कहता कि जब मुझे मेरा गुरु मिल जाएगा वह मुझे जो हुक्म देगा मैं उसे मानूंगा। ये मेरे बचपन के जज्बे थे। इस तड़प से मेरी आंखों की नींद घट गई, भूख कम हो गई। मैं अच्छे मकान में रहकर खुश नहीं था, अकेला रहकर ही खुश था। मुझे बचपन से ही बिस्तर अच्छा नहीं लगता था, मैं जमीन पर सोकर ही खुश था जिससे मेरे माता-पिता खुश नहीं होते थे। वे कई दफा तो काफी नाराज हो जाते थे।

मैं यह भी बताया करता हूँ कि मेरे पिता के पास परमात्मा का दिया हुआ बहुत धन-पदार्थ था, मेरे पिता ने मेरे लिए हर प्रकार की सहूलियत पैदा की। पंजाब में अभी वह कोठी मौजूद है जो मेरे पिता ने बहुत सारा धन खर्च करके मेरे लिए बनवाई थी। यह एक सच्चाई है कि मैंने उस कोठी में आराम नहीं किया। मैं अपने पिता से कोई सहूलियत लेकर खुश नहीं था। मैं सोचता था कि परमात्मा ने इतना बड़ा संसार बनाया है क्या एक आदमी अपनी रोजी-रोटी खुद कमाकर नहीं खा सकता? मैं इस बात को लेकर बचपन से ही अपनी रोजी-रोटी खुद कमाता आया हूँ।

जिन दिनों में मेरे दिल में तड़प थी, मैंने जब खोज शुरू की थी उस समय हिन्दुस्तान में साधुओं की बहुत सी जमातें फिरती थी। किसी के पास 'एक-शब्द' का भेद था तो किसी के पास 'दो-शब्द' का भेद था। आज की तरह वे लोग ज्ञानी-ध्यानी और सिर्फ लेक्चर देने वाले नहीं थे उनका थोड़ा बहुत प्रैक्टिकल भी था। धीरे-धीरे लोगों ने उन्हें चढ़ावे चढ़ाए उन्हें जायदादें दी तो कमाई वाले साधु

वहाँ से चले गए और वहाँ डेरे बन गए। वहाँ ऐश-परस्त लोग रह गए। आमिल कम हो गए और आलम रह गए। महाराज सावन सिंह जी अक्सर कहा करते थेः

वैद्य वकील सन्त सरदारे पिंड विच मान न पौंदे चारे।
नानक दादक ते घरवाली ऐह वी रैहण साध तो खाली।।

गुरु नानकदेव जी पूर्ण महात्मा थे, आप परमात्मा के हुक्म में आए थे। बहुत से लोगों ने आपसे फायदा उठाया और शान्ति प्राप्त की लेकिन आपके बच्चों ने आपके उसूल नहीं माने। श्रीचन्द ने गुरु नानकदेव जी से पाँच-शब्द का भेद नहीं लिया उसने अविनाशी मुनि को गुरु धारण किया, दो-शब्द का भेद लिया।

जिन दिनों मेरी खोज आरंभ हुई उस समय आम लोग जलधारे करते और धूनियाँ तपाते थे। जलधारा इस तरह किया जाता है कि एक घड़े से लेकर सौ घड़े या उससे भी अधिक घड़ो का पानी सिर पर गिराया जाता है। एक किस्म की चौरस घड़वंजी बनाकर घड़े में नीचे की तरफ छेद किया जाता है फिर उस घड़े से पानी सिर के तालु पर डाला जाता है। दो-चार आदमी बारी-बारी से उस घड़े में पानी भरते रहते हैं, वे लोग घड़े को खाली नहीं होने देते। जब सब घड़ो का पानी खत्म हो जाता है उस समय तक वह आदमी इतना ज्यादा ठण्डा हो जाता है कि उसे उठाकर आग की राख पर लिटाया जाता है। आग जलती तो नहीं लेकिन राख बहुत गर्म होती है जिससे शरीर गर्म हो जाता है।

बहुत से पाखंडी लोग नशा खाकर, गाँजा इत्यादि पीकर बैठ जाते हैं। उन्हें कोई मतलब नहीं होता वे सिर पर पानी पड़ने ही नहीं देते। उनकी जटाएं होती हैं उसके आस-पास कपड़ा बाँध लेते हैं कि कोई हमें देख न ले। वे हाथ आगे कर लेते हैं और पानी

हाथों पर गिरता है दूसरे लोग सोचते हैं कि पानी बाबा के सिर पर गिर रहा है लेकिन प्रेमी इस तरह नहीं करते। प्रेमी न तो नशा करते हैं और न खाते-पीते हैं वे तो सच्चे दिल से जलधारा करते हैं। हिन्दुस्तान में दिसंबर के महीने में बहुत ठंड होती है, इस पूरे महीने में जलधारा किया जाता है।

जून का महीना सबसे अधिक गर्म होता है। धूनियाँ चारों तरफ से लगाई जाती हैं और पाँचवी ऊपर से सूरज की गर्मी पड़ती है। धूनियाँ दिन के बारह बजे शुरु की जाती है। कोई दस हजार राम अक्षर का जाप करता है और कोई इससे भी अधिक जाप करता है। ये लोग लगभग पाँच-छह घंटे आग में बैठते हैं।

उस समय इन कर्मकाण्डों का बहुत जोर था। मैंने ये कर्मकाण्ड बड़े प्यार और श्रद्धा के साथ किए हैं। मैं सुनी-सुनाई बात नहीं करता यह मेरा जातिय तजुर्बा है। मैंने किसी की निन्दा नहीं की लेकिन जब इन कर्मकाण्डों से मुझे शान्ति नहीं मिली तो मैं बाबा बिशनदास जी के पास गया।

बाबा बिशनदास जी ने मुझे बताया कि ये जितने भी बाहर के रीति-रिवाज और कर्मकांड हैं इनका आत्मा के साथ कोई संबंध नहीं। अगर पानी में बैठने से मुक्ति मिलती होती तो मेंढक, मछलियां दरिया और तलाबों में ही रहते हैं वे सब मुक्त हो जाते। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की आग तो हमारे अंदर पहले ही बहुत जल रही है बाहर से शरीर को जलाने की क्या जरूरत है?

बाबा बिशनदास जी के गुरु अमोलक दास थे। बाबा अमोलक दास को श्रीचन्द से रास्ता मिला था। श्रीचन्द तकरीबन डेढ़ सौ साल इस संसार में रहे। बाबा अमोलक दास भी इस संसार में एक सौ

चालीस साल रहे। बाबा बिशनदास जी ने मुझे 'दो-शब्द' का भेद देकर संतुष्ट नहीं किया था, न वे खुद संतुष्ट थे। उन्हें पता था कि इससे ऊपर भी रास्ता है यह खोज पूरी नहीं।

बाबा बिशनदास जी ने मेरी खोज जारी रखी, उस समय मैं आर्मी में था। किसी वक्त महाराज सावन सिंह जी ने नॉशेरा को बसाया था। पेशावर पठानों का इलाका है, पेशावर और नॉशेरा में थोड़ा ही फर्क है, गाड़ी में तकरीबन दो-तीन घंटे का सफर है। महाराज सावन सिंह जी पेशावर गए। पठान लोग हमारी आर्मी में दातुन बेचने आते थे, उन्होंने महाराज सावन सिंह जी का सतसंग सुना। वे पठान आपस में बातें कर रहे थे कि पंजाब से कोई महात्मा आए हैं उनकी अंदर की चढ़ाई का तो पता नहीं लेकिन देखने में यह महात्मा बहुत सुंदर हैं इनकी दाढ़ी बहुत अच्छी है।

हमारा कमांडर बहुत धार्मिक आदमी था, वह आमतौर पर हर महात्मा के सतसंग में जाया करता था। मैंने अपने कमांडर से जिक्र किया कि पठान इस तरह तारीफ कर रहे हैं। हमारे कमांडर ने कहा, ''हम जरुर चलेगें।'' हमने छुट्टी ले ली और पेशावर जाकर महाराज जी के दर्शन किए उनसे काफी बातें की। वह मनमोहक सूरत मेरी आँखो में ऐसी समाई और मेरे अंदर इस तरह घर कर गई कि संसार की कोई शक्ल मुझे अच्छी नहीं लगी।

जब मैंने बाबा बिशनदास जी के पास जाकर जिक्र किया कि इस तरह की शक्ल का महात्मा देखा है। मुझे समझ आता है कि वह पूरे महात्मा हैं। बाबा बिशनदास जी कुँए के मेंढक नहीं थे, आप विशाल दिल वाले महात्मा थे। मेरे कहने की देर थी कि बाबा बिशनदास जी महाराज सावन सिंह जी के दर्शनों के लिए फौरन तैयार हो गए।

उस समय बाबा बिशनदास जी काफी बुजुर्ग हो चुके थे। महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''अब नामदान का वक्त नहीं। आपने संसार से जल्दी चले जाना है लेकिन हमारा आपके साथ वायदा है कि हम आपको ऊपर के मंडलों से ही ऊपर ले जाएगें।''

बाबा बिशनदास जी ने महाराज सावन सिंह जी के सामने मेरी तारीफ की कि हमारे इस सेवक ने बहुत जप-तप किए हुए हैं धूनियाँ तपाई हुई हैं और सब कर्मकाण्ड भी किए हुए हैं। तब बाबा सावन सिंह जी ने हमारी मुलाकात बाबा सोमनाथ के साथ करवाई कि हमारे इस सेवक ने भी ये सब कर्मकाण्ड किए हुए हैं।

बचपन और जवानी में मेरा चेहरा हर एक को बहुत आकर्षित करता था। औरतों ने तो मोहित होना ही था आदमी और बुजुर्ग भी मोहित हो जाते थे। मेरी आँखों और चेहरे की ज्यादा से ज्यादा तारीफ करते थे। जब मैं धूनियां तपाता था तो मुझे देखने के लिए ज्यादा से ज्यादा औरतें आती थी। कई औरतें कहती, ''इसकी माँ को इसे घर से भेजकर किस तरह सब्र आया होगा?'' कईयों ने पूछा, ''तुझे क्या दुख लगा है तू आग में क्यों बैठा है?'' मेरे कहने का भाव है ऐसे वक्त में धूनियाँ तपाना सिर्फ प्यार और तड़प ही है।

एक लड़की विधवा हो गई, वह रोकर मुझसे कहने लगी, ''यह जिंदगी काटनी बड़ी मुश्किल है लोग ताने मारते है।'' मैंने हँसकर कहा, ''आदमी के लिए भी जिंदगी काटनी बड़ी मुश्किल है।'' मेरे साथ बीती है कि जो औरतें मेरी तरफ देखती थी मैंने उन्हें जूते मारे हैं। कहने का भाव अगर हमारे मन के अंदर गुरु के लिए प्यार और तड़प न हो तो इंसान विषय-विकारों के जंगल से बच नहीं सकता। हम सब लोग बातें तो करते हैं लेकिन इन पर चलना बहुत मुश्किल है।

मेरे साथ जो आदमी रहे हैं मैं उन्हें कहता हूँ कि क्या आप अपने आपको ब्रह्मचारी समझते हैं आप अपने दिल में झाँककर देखें? इसमें औरत-मर्द का सवाल नहीं। काम और नाम की दुश्मनी है। जहाँ नाम है वहाँ काम का बाज पर नहीं मार सकता। जहाँ दिन है वहाँ रात नहीं और जहाँ रात है वहाँ दिन नहीं हो सकता।

मैं जब महाराज सावन सिंह जी के पास नामदान के लिए और लंगर में सेवा डालने के लिए पेश हुआ तब आप बहुत खुश हुए, आप बहुत दयालु थे। आपने कहा, ''वक्त आने पर सेवा भी ली जाएगी और तुझे नाम देने वाला खुद तेरे घर चलकर आएगा। अभी तेरा वक्त नहीं आया क्योंकि हर इन्सान का वक्त होता है कि उसे गुरु ने कब नाम देना है।''

मैं ज्यादा से ज्यादा महाराज सावन सिंह जी के पास जाता रहा हूँ। मेरी आर्मी का कमांडर भी आपका नामलेवा था। मैं महाराज सावन सिंह जी का जन्मदिन बड़ी श्रद्धा और प्यार के साथ हमेशा मनाता रहा हूँ। इस इलाके में महाराज सावन सिंह जी के केवल ग्यारह नामलेवा सतसंगी थे। मैं बीस मील चलकर आता और जो खर्चा होता उसे बड़े प्यार और श्रद्धा के साथ करता था। अब आप लोग अंदाजा लगा सकते हैं कि मेरा सावन सिंह जी के साथ कितना प्यार था और मुझे उन पर कितना भरोसा था। मेरी तन-मन से उनके ऊपर श्रद्धा थी, यह उनकी ही दया है।

मैं जिस वक्त की बात कर रहा हूँ उस वक्त यहाँ रेत ही रेत थी, कोई सड़क नहीं थी, जीप और कार कुछ भी नहीं था। नदियों का पानी नहीं था, पाँच-छह घंटे पैदल चलकर जाना पड़ता था। जिसे प्यास होती है वह श्रद्धा से पानी पीता है और जिसे प्यास नहीं वह कई दफा पूछेगा कि पानी साफ है या नहीं? मुझे प्यास थी।

महाराज सावन सिंह जी का खास सेवक बलूचिस्तानी मस्ताना था। महाराज सावन सिंह जी ने मस्ताना जी को बागड़ का बादशाह बनाया था। मस्ताना जी ने इस इलाके में गरीबों को ज्यादा से ज्यादा धन बाँटा। मैं उनके पास जाता रहा हूँ। आप कोई अक्षर नहीं जानते थे बस! सावन सिंह जी के प्यार का इजहार करते थे।

मस्ताना जी का मेरे साथ बहुत प्यार था। जब उन्होंने संगत को कोई गवाही देनी होती तो आप मुझे खड़ा कर देते और कहते, ''बता भई! सावन कैसा था?'' मैंने जैसा देखा था वैसा ही बताता कि आप बहुत सुन्दर, उदारवादी महात्मा थे आप बड़े ही दयालु थे, आपकी दया का वर्णन नहीं किया जा सकता। मस्ताना जी बहुत खुश होते। एक दिन मैंने मस्ताना जी से कहा, ''साँई! सावन सिंह जी ने मुझसे यह कहा था कि तुझे वस्तु देने वाला तेरे घर आएगा क्या आप वही हैं?'' मस्ताना जी खुश हुए और बोले, ''जिसने तुझे वस्तु देनी है उसने बहुत कमाई की हुई है अगर तोपें चल रही हों और वह अपने दोनों हाथ खड़े कर दे तोपें रुक जाएंगी। वह तेरे घर आएगा और तुझे नामदान देगा, तू इन्तजार कर।''

परमात्मा कृपाल मेरे घर आए। वाक्य ही उन्होंने ज्यादा से ज्यादा कमाई की हुई थी और उन्होंने मेरी जन्मों-जन्मों की प्यास को बुझाया। मैं उनका क्या धन्यवाद करूँ क्योंकि जुबान के साथ धन्यवाद नहीं होता। धन्यवाद अन्दर जाकर ही होता है। मेरे ऊँचे भाग्य थे कि मैंने उनका हुक्म माना जो उन्होनें कहा मैंने किया।

मैं आप लोगों को उनका दिया हुआ प्यार ही देता हूँ और उनकी ही बात सुनाता हूँ। मेरे अंदर बहुत सालों की तड़प थी, इस पर कई ग्रंथ बन सकते हैं। अगर शिष्य के अंदर ऐसी तड़प हो तो परमात्मा ऐसी तड़प वालों के पीछे-पीछे घूमता है उन्हें ढूँढता है।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

इंसानी जामा एक मौका

एक बहुत ही सुहावना नगर था, उस नगर के लोग भी बहुत खुशहाल थे। वे लोग हर साल एक नया राजा चुनते और उस राजा की आज्ञा का पालन बहुत अच्छी तरह से करते थे लेकिन एक साल बाद उस राजा को जंगल में छोड़ आते थे बेशक जंगल में राजा को शेर, कुत्ता, बिल्ला या कोई भी जानवर खा जाए।

इसी तरह उस नगर के लोगों ने एक बहुत समझदार राजा चुना। वह राजा विवेक-बुद्धि वाला था उसने सोचा मुझे यह राज्य एक साल के लिए मिला है प्रजा मेरा कहना मानती है, मैं वह काम करूं जो एक साल बाद मेरे काम आए ताकि मैं एक साल बाद अपनी अच्छी जिंदगी बिता सकूँ।

राजा ने जंगल का अच्छी तरह मुआयना किया और वहाँ एक बहुत अच्छा आलिशान महल बनवाया। उस महल में अच्छा फर्नीचर और खाने-पीने का सामान भिजवा दिया। उस महल को अपने एक मित्र के नाम करवा दिया। एक साल बीतने के बाद वहाँ के लोग अपने राजा को जंगल में छोड़ आए। राजा ने अपने लिए सब इंतजाम पहले ही किया हुआ था इसलिए वह अपनी जिंदगी उस महल में सुख से बिताने लगा।

यह तो एक कहानी है। हमने इस कहानी से शिक्षा लेनी है कि परमात्मा ने हमें **इंसानी जामा एक मौका** दिया है, यहाँ मन राजा और इन्द्रियां प्रजा हैं। इन्द्रियां मन का हुक्म मानती हैं मन जो भी कहता है इन्द्रियां वही करके दिखाती हैं। हम जानते हैं जब

आखिरी समय आता है तो हमारे रिश्तेदार हमें श्मशान में छोड़कर चले आते हैं या मिट्टी के सुपुर्द कर देते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

जब जलिए तब होए भस्म तन, रहे किरम दल खाई।
कच्ची गागर नीर परत है, यही तन की वडियाई।।

अगर आग के सुपुर्द कर दिया जाता है तो राख बन जाती है मिट्टी में दबा दिया जाता है तो उसे कीड़े खा जाते हैं। हमारी देह भी कच्चे घड़े की तरह है जिसमें पानी नहीं ठहरता। बिमारियां शरीर को खराब कर देती हैं, बुढ़ापा बिमारियों का घर है। हमें यह एक मौका मिला है, समझदार लोग जिंदगी में वह काम करते हैं जो जिंदगी के बाद काम आए।

हमें **इंसानी जामा एक मौका** मिला है, इसमें बैठकर हम वह काम करें जो आखिरी समय में हमारे काम आए। जिसने हमें 'नाम' दिया है उसने हमारी जिम्मेवारी ली है। हम शब्द-नाम की कमाई करके जो भी पूँजी कमाते हैं हमारा गुरु उसे इकट्ठा करके रखता है। जो बच्चा अपने पिता के कहे अनुसार चलता है पिता उसका हक नहीं रखता बल्कि अपनी कमाई भी उसके हवाले कर देता है, पिता जानता है कि बच्चा समझदार है।

आखिरी समय में माता-पिता, बहन-भाई और किसी समाज ने हमारी मदद नहीं करनी। अभी गुरमेल सिंह ने यह शब्द बोला कि नौकर-चाकर, कारें या तिजोरी में जो माया है यहाँ का सब सामान यहीं छोड़ जाना है। सगे-सम्बंधी जो प्यार का दम भरते हैं वही हमें अग्नि के हवाले कर आते हैं। मुर्दे को कौन घर में रखता है? सब यही कहते हैं इसे जल्दी से ठिकाने लगाया जाए।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा माता–पिता के लिए एक संदेश

संदेश

कृपाल आश्रम, सरी कनाडा — जून 1990

माता-पिता अपने बच्चों के लिए जिम्मेवार हैं। माता-पिता को अपने बच्चों को समझाना चाहिए कि सतसंग और यात्रा का कार्यक्रम उनके जीवन की एक बहुत महत्त्वपूर्ण घटना है। सन्त व उनके सेवकों की संगत जीवन में बार-बार नहीं मिलती, इसे मौज-मस्ती करने का मौका नहीं समझना चाहिए।

हर किसी को इस समय की कद्र करनी चाहिए और इससे पूरा फायदा उठाना चाहिए। यह छुट्टियां मनाने या घूमने-फिरने का समय नहीं है। मन, वचन और कर्म से पवित्रता बनाए रखना जरूरी है। अगर आप कार्यक्रम से फायदा उठाना चाहते हैं तो आश्रम और गुरु का मतलब समझें, सही आचरण का अनुसरण करें।

माता-पिता को यह नहीं सोचना चाहिए कि उनका काम केवल बच्चों को आश्रम तक लाने का ही था और अब जब बच्चे आश्रम में आ गए हैं तो गुरु उनका जिम्मेवार है। गुरु आपकी रूहानी भलाई का जिम्मेवार है लेकिन दुनियावी तौर पर आप अपने बच्चों के लिए जिम्मेवार हैं।

आप अभी से बच्चों को कार्यक्रम के लिए तैयार करें। उन्हें सन्तमत के बुनियादी उसूल सिखाएं और यकीन दिलाएं कि जो तजुर्बा वह करने जा रहे हैं वह उनकी आत्मा की बहुत मदद करेगा, आपको इस वक्त से लाभ उठाना चाहिए।

***

धन्य अजायब

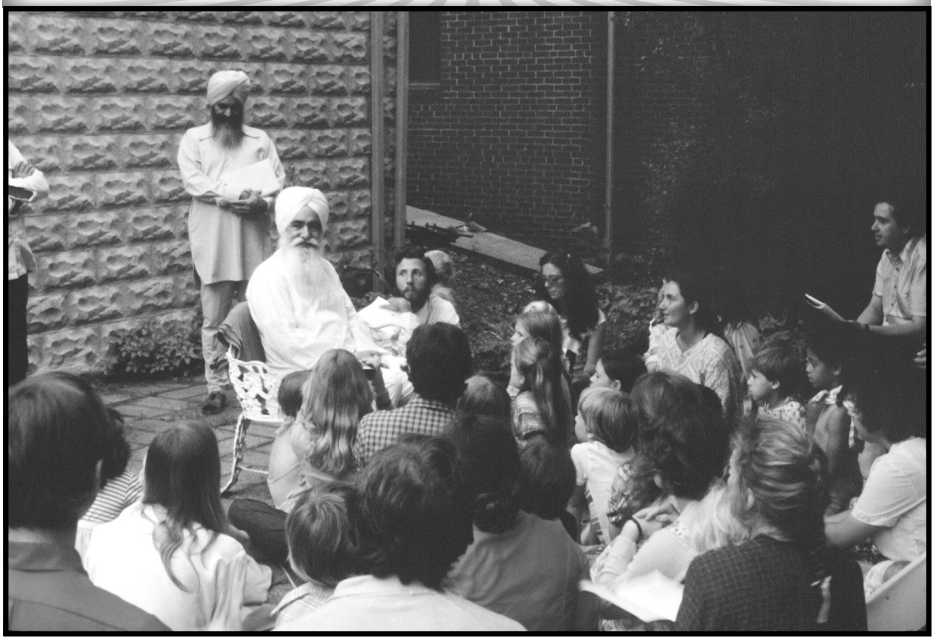

गुरु प्यारी साध संगत,

हर साल की तरह इस साल भी बाबा जी की अपरम्पार दया से दिल्ली में 17, 18 व 19 मई 2019 को भजन-अभ्यास और सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी प्रेमी भाई-बहनों से प्रार्थना है कि नीचे लिखे पते पर समयानुसार पहुँचकर बाबा जी की दया प्राप्त करें।

कम्युनिटी हॉल,

भेरा इन्कलेव, पश्चिम विहार, (नजदीक पीरागढ़ी)

नई दिल्ली - 110087 फोनः 98 10 21 21 38 , 98 18 20 19 99

अहमदाबाद में सतसंग का कार्यक्रम 5,6 व 7 जुलाई 2019 का है